९०९. सुख शांति संतोष आनंद

२०-०९-२०१३

मानव सुख, शांति, संतोष, आनंदपूर्वक जीने के लिए मानवीयता को अपनाना ही होगा

मानवीयता ही चेतना है | चेतना के स्वरूप का दो भाग है | जीव चेतना, मानव चेतना अथवा जागृत चेतना, अजागृत चेतना | जागृत चेतना ही मानव चेतना है | शरीर को जीवन मानकर जीना ही जीव चेतना है | जीवन को जीवन समझना, शरीर को भौतिक रासायनिक वस्तु के रूप में जानना मानना, पहचानना, निर्वाह करना ही विकसित चेतना सहज मानव चेतना है | यही अवधारणा सहज ज्ञान की महिमा है | यह न्यायान्याय धर्माधर्म सत्यासत्य ज्ञान एवं आचरण ही है | जीव चेतना विधि से इन सब का कल्पना एवं भाषा भर रहता है | अंतर यही है |

मानव चेतना ही विकास को पाकर देव चेतना, अंतिम विकास दिव्य चेतना के रूप में व्यवहृत होता है | दिव्य मानव चेतना ही अनुभवमूलक विधि से प्रमाणित होना पाया गया है | होना ही रहना है | रहना ही परम्परा है | परम्परा में ही मानवता का पहचान होता है, समुदाय में नहीं होता है | समुदाय में शुरू हो सकता है | अभी तक किसी समुदाय में शुरू नहीं हुआ | क्रमागत विधि से अर्थात परम्परागत विधि से ही मानवीयता का व्याख्या है | मानवीयता का व्याख्या आचरण ही है | हर व्यक्ति व्याख्या के योग्य है | मानव जात ही ज्ञानावस्था में, हर मानव समझदार होना चाहता है, सुखी होना चाहता है | यही सर्वप्रथम जाँच का आधार है, शोध का आधार है, अनुसंधान का आधार है | अनुसंधान ही मूल मुद्दा है | अनुसंधान विधि से ही विकल्प का प्रस्ताव प्रस्तुत है | ये प्रस्तुति अध्ययन के अर्थ में है | भाषा अध्ययन नहीं है, पठन है | पठन अध्ययन नहीं होता | पठन से अध्ययन होता है | पठन केवल शब्द है | शब्द के अर्थ में अध्ययन है | अध्ययन से ज्ञान है | अध्ययन ही ज्ञान है | इसके पहले प्रक्रिया एवं प्रयास है | अध्ययन विधि से समझदारी है | समझदारी ही ज्ञान है |

ज्ञान ही आचरण का आधार है | मानव ज्ञानावस्था में नियति विधि से प्रस्तुत है | ज्ञान सम्पन्न होने का अधिकार हर मनुष्य में होना पाया जाता है | हर देश काल में भी पाया जाता है | ये शोध की बात है | शोध से यह निश्चित होने के पश्चात अध्ययन प्रक्रिया होता है | शब्द के अर्थ में अध्ययन होता है | शब्द पठन के रूप में होता है | पठन अध्ययन नहीं होता | पठन यांत्रिक होता है | जीवन विद्या अर्थात जीवन ज्ञान एक शब्द है | शब्द मात्र से जीवन का अर्थ ज्ञान सम्पन्न नहीं होता है | शब्द का अर्थ में ही जीवन ज्ञान सार्थक होता है | अर्थ अस्तित्व में वस्तु है | इसलिए शब्द का अर्थ में ज्ञान, ज्ञान के अर्थ में आचरण होना ज्ञानावस्था के मानव का अधिकार है | अब अध्ययनशील मानव में सब से बड़ी कठिनाई या रोड़ा यही है, शब्द को ज्ञान मान लेना | अथवा तर्क को ज्ञान लेना | अथवा स्मरण को ज्ञान मान लेना | अथवा आदर्श को आचरण मान लेना | न्याय, आदर्श नहीं है | न्याय वास्तविकता है | भाषा को लेकर विगत के अध्यात्मवादियों में अथक प्रयास किया | उसमें भी फसावट का यही कारण रहा |

ज्ञानावस्था में मानव सह-अस्तित्व विधि से ही प्रतिष्ठित है; क्योंकि सह-अस्तित्व में ही ज्ञानावस्था का वैभव है | सह-अस्तित्व को छोड़कर व्यक्तिवाद, समुदायवाद में ज्ञानगम्य नहीं होता है | हर समुदाय जो संविधान बनाए हैं, प्रत्येक समुदाय अपने में साधना विधि को पहचाना है | तरीका अलग-अलग है | देशकालीय विधि से बना है | इस क्रम में मानव प्रयास किया

है | अभी तक मानव किसी भी समुदाय परम्परा में हो, ज्ञान की अपेक्षा है, ज्ञान सार्वभौम रूप में प्रमाणित नहीं हुआ क्योंकि अभी तक धरती पर, इसी धरती पर १०० से अधिक संविधान बना है | १०० से अधिक राज्य, १०० से अधिक समुदाय | इस क्रम में अभी तक का स्थिति में किसी भी समुदाय में न्याय का पहचान नहीं हो पाया | समझदारी का पहला पहचान, प्रमाण न्याय ही है | विकसित चेतना का पहला भाग मानव चेतना यही है | दूसरा भाग देव चेतना है, इसमें धर्म प्रमाणित होता है | तीसरा भाग दिव्य चेतना है, इसमें सत्य प्रमाणित होता है, ऐसा तीन नाम दिया है | ये सब विकसित चेतना ही हैं, सभी मानवीयतापूर्ण आचरण ही करेंगे | मानव चेतना ही श्रेष्ठ, श्रेष्ठतर, श्रेष्ठतम विधि से प्रमाणित होता है | प्रमाणित होने के क्रम में हर मानव का अधिकार रुपी अनुभवमूलक विचार, विचार सम्मत व्यवहार पहचाना है, तभी विकल्प को प्रस्तुत किया है | विकल्प विधि से इन तीनों प्रकार के प्रमाण मानवीयता ही कहलाता है | कहने का अधिकार हर मनुष्य में समान रूप में पाया जाता है | भाषा का अधिकार के बाद विचार का अधिकार |

विचारमूलक विधि से ही भाषा का प्रयोग होता है | विचार जैसा चाहता है, उसी को प्राथमिकता विधि से भाषा प्रयोग होता है | इस क्रम में मानव अभी तक जीव चेतना में जीते हुए, जीवों से अच्छा जीने के लिये जिया, जिसमें सफल हो गया | अब सफल होने के लिए केवल मानवीयता ही रह गया है | मानवीयता ही एकमात्र सफलता का आधार होने के आधार पर विकल्प प्रस्तुत है | भौतिकवाद, आदर्शवाद दोनों वाद, सभी समुदाय में प्रबल रूप में स्वीकृत है | भौतिकवाद अपराध में फंस कर, अपराध परम्परा में फंस कर कर्तव्यविमूढ़ हो गये | कर्तव्यविमूढ़ता क मतलब न्याय करने का तरीका प्राप्त नहीं हुआ | न्याय चाहते हुए न्याय सुलभ नहीं हुआ | अनुसंधान सदा से चला है | भौतिकवादी विधि से भी चला, आदर्शवादी विधि से भी चला | दोनों विधि से न्याय का पहचान नहीं हुआ, सर्वमानव में न्याय सुलभ नहीं हुआ | अभी का विधि में चुप रहने का स्वरूप को पहुँचा हुआ माना जाता है | चुप रहना एक निग्रह बिंदु है | निग्रह बिंदु का मतलब, हमारा समझ नहीं हो पाना, हमारा समझ में नहीं आना | समझ विधि से हम काम नहीं कर पाना | यही निग्रह बिंदु का मतलब है | निग्रह बिंदु परम्परा का आधार नहीं होता | अध्ययन विधि ही परम्परा का आधार होता है | अध्ययन विधि का मतलब यही है, अभी तक शब्द विधि से बहुत कुछ बताया न्याय, धर्म, सत्य के सम्बंध में | न्याय ही प्रमाणित नहीं हुआ, धर्म और सत्य कहाँ से होगा |

धर्म और सत्य प्रमाणित होने के लिये न्याय प्रमाणित होता है | यह विकल्प को अध्ययन करने से बोध होता है | मानव ही अध्ययन का एकमात्र इकाई है, बाकी तीनों अवस्था अध्ययन करता है या नहीं करता इसका शोध किया जा सकता है | हर मनुष्य शोध कर सकता है | शोध के आधार पर निर्णय हो सकता है | जिस विधि को सुख मानता है, उसी को वरीय मानता है | जिसको वरीय मानता है, उसी का आचरण करता है | जिसका आचरण होता है, उसी का फल परिणाम होता है | इस विधि से अन्याय, न्याय का पहचान हो पाता है | इन पहचान के आधार पर मानव जीता ही है | पहचान के बिना जीता ही नहीं | क्योंकि धरती को पहचानता है, चल पाता है | हवा को पहचानता है, चल पाता है, पानी को पहचानता है, चल पाता है | आग को पहचानता है, उपयोग कर पाता है | गंध को पहचानता है, सेवन करता है | इसी प्रकार शब्दों को पहचानता है, अर्थ को स्वीकारता है | शब्द का अर्थ ही दो भाग होता है, यांत्रिक और व्यवहारिक | यांत्रिक अर्थ दिखावा होता है | न्यायिक अर्थ व्यवहारिक होता है | इन दोनों प्रकार से अध्ययन करने वाला केवल मानव ही है, न जीव करता है, न वनस्पति संसार करता है, न ही पदार्थ संसार करता है |

इस विधि से निरर्थक हुआ अभी तक का अथक प्रयास चलते ही रहा, प्रयोजन निकलना रह गया | मानव परम्परा में प्रयोजन केवल न्याय, धर्म, सत्य ही है | सत्य सहज प्रमाण अर्थात सह-अस्तित्व रुपी परम सत्य का अनुभवमूलक प्रमाण सर्वतोमुखी समाधान है | हर मुद्दे में न्याय, धर्म, सत्य को पहचानना ही समझदारी है | न समझना ही बेवकूफी है | बेवकूफी से सकल अपराध होता है | भ्रमित होना भी बेवकूफी से होता है | इस क्रम में मानव कहां है, हर मनुष्य अध्ययन विधि से, पठन विधि से अनुभव कर सकता है | ये तो सहज विधि से होने वाली बात है | अध्ययन सहज क्रम में ज्ञान होता है | ज्ञान का शुरुआत है, साक्षात्कार | साक्षात्कार के पहले कल्पना ही रहता है | साक्षात्कार होने से व्यवहार का नियंत्रण आता है | अथवा संयंत होता है | व्यवहार के संयमन को स्वीकारे बिना साक्षात्कार भी नहीं होता है | न्याय सांगत विचार से व्यवहार का नियम पूर्वक नियंत्रण से सुख आता है | समाधान पार्क इच्छा अनुसार विचार का नियंत्रण से शांति आता है | साक्षात्कार के स्थिर होने से अवधारणा मूलक इच्छा से संतोष आता है | सत्य बोध होने से आत्मा सहज प्रभाव से आनंद आता है | इस ढंग से न्याय धर्म सत्य ही जीवन में अनुभव में आता है |

न्याय, धर्म, सत्य यदि अनुभव नहीं होता है, अध्ययन नहीं हुआ | अध्ययन का मतलब ही न्याय, धर्म, सत्य है | न्याय, धर्म, सत्य का प्रमाण ही मानव परम्परा है | यही परमानन्द, आनंद, संतोष, शांति, सुख पूर्वक जीना बन जाता है, प्रमाणित होता है | मानव परम्परा ही श्रेष्ठ, श्रेष्ठतर, श्रेष्ठतम विधि से मानव परम्परा, देव परम्परा, दिव्य परम्परा के रूप में प्रमाणित हो पाता है | इसी परम्परा के लिए मानव अनादि काल से त्रसित है, अपेक्षित है, प्रयासरत है | इन तीनों प्रकार से मानव दुरुस्त है | केवल एक भाग नहीं है, सह-अस्तित्व में अनुभव | सह-अस्तित्व में अनुभव के पश्चात ही न्याय, धर्म, सत्य प्रमाणित होता है |

न्याय, धर्म, सत्य प्रमाणित होना ही मानव परम्परा का आधार है | दूसरे कोई विधि से अखण्ड समाज परम्परा होता ही नहीं | समुदाय परम्पराएं अखण्ड समाज होता नहीं | समुदाय परम्परा से अखण्ड समाज का शुरुआत हो सकता है | वह अभी तक हुआ नहीं | इसी क्रम में मानव शोध कार्य करता ही रहता है | आज का शोध कार्य, दूसरे का कुछ कहा हुआ बातों को दोहरा देने से शोध माना जाता है | इस क्रम में मानव अपराध प्रवृत्ति से अथवा अपराध प्रवृत्तियों से आहत होता ही रहा, ये कभी रुका नहीं | अपराध प्रवृत्तियां न रुकना ही यांत्रणिक प्रक्रिया का आधार है | यंत्रणा का प्रक्रिया बहुत विगत से है | इसको कहाँ से सीखा- जीवों से सीखा, इसलिये जीव चेतना को अपनाया | केवल यंत्रणा को पहचाना जीवों से |

आहार पद्धति को पहचानने गया जीवों से; पता लगा शाकाहार, मांसाहार दोनों हो गया | इन दोनों को मनुष्य ने अपनाया | अभी की स्थिति में भौतिक विधि से, भौतिक-रासायनिक तत्वों को सोचते हुए, मानव शाकाहार का पक्षधर है | | जीवन के आधार पर सोचना भौतिकवादी विधि से बनता ही नहीं | जीवन का अध्ययन न भौतिक है न रासायनिक है | ज्ञान रूप में होना पाया जाता है | इसी के आधार पर अर्थात जीवन के आधार पर मानवीयता को पहचाना जाता है | इस क्रम में मानव का उद्धार होना सम्भव है | इसी आधार पर एक मानव तीर्थ बनाने के लिए प्रयत्नशील हैं हम, हमारे साथ काम करने वाले |

जय हो, मंगल हो, कल्याण हो |

- ए. नागराज | प्रणेता एवं लेखक | मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद) | दिव्य पथ संस्थान(भजनाश्रम) | अमरकंटक | जिला-अनूपपुर(म. प्र.)